II

Date: / /

विकास को प्रभावित करने वाले कारक →

वृद्धि →

बालक के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों में सबसे महत्वपूर्ण कारक वृद्धि है। हरलॉक का कथन है, — उच्च स्तर की वृद्धि विकास को तीव्रगामी बनाने से सम्बन्धित होती है। जब कि निम्न स्तर की वृद्धि पिछड़ेपन से सम्बन्धित होती है।

यौन →

शारीरिक और मानसिक विकास पर यौन का भी महत्वपूर्ण प्रभाव दिखाई पड़ता है। बालिकाओं का विकास बालक की अपेक्षा तीव्र गति से होता है। तथा उनमें परिपक्वता भी शीघ्र आती है। बालिकाओं का मानसिक विकास भी बालकों से पहले होता है।

3> अन्तः स्रावी ग्रन्थियाँ →

बालक के विकास पर अन्तःस्रावी ग्रन्थियों का भी प्रभाव पड़ता है। पैराथाइरायड ग्रन्थियाँ कैलसियम को रक्त में मिलने से सहायता देती है। इस ग्रन्थि से क्षय स्राव होने पर हड्डियों का विकास ठीक नहीं होता।

जो थाइरायड ग्रन्थि से थाइराक्सिन नामक स्राव होता है। जो कि शारीरिक और मानसिक विकास के लिए आवश्यक है।

Date: / /

## पौष्टिक भोजन →

विकास की सभी अवस्थाओं में विशेष रूप से प्रारम्भिक काल में सामान्य विकास के लिए भोजन का बहुत अधिक महत्व है। भोजन की मात्रा से अधिक भोजन के पौष्टिक तत्वों का होना आवश्यक है। भोजन में पौष्टिक तत्वों के अभाव में बच्चों में दाँत के रोग हड्डी के रोग चर्मरोग तक अन्य रोग हो जाते हैं।

## वंशानुक्रम की प्रक्रिया →

प्रत्येक मनुष्य का शरीर असंख्य कोषों (cells) से निर्मित होता है। एक कोष का व्यास लगभग 127 मिलीमीटर होता है। गर्भावस्था की प्राथमिक अवस्था में भ्रूण की रचना केवल एक ही कोष से होती है। जो युक्त कहलाती है। युक्त सहवास के समय पुरुष के शुक्र और स्त्री के अण्ड के संयोग होने पर निर्मित होती है। इस युक्त में माता-पिता दोनों के गुण समाविष्ट होते हैं। शुक्र और अण्ड के मिलकर एक हो जाने की क्रिया को संलयन या सायुज्यन कहते हैं।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया